कोंपल

भाग– 3

पाँचवीं कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक

Developed by: SOL www.absol.in

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत
पाठ्य-पुस्तकों का निःशुल्क वितरण।
क्रय-विक्रय दण्डनीय अपराध।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

सर्व शिक्षा अभियान : 2013-14 - 28,15,503

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि०, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा मणी प्रिण्टर्स, बबुआगंज, पटना 800 007 द्वारा एच.पी.सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोभ टेंक्स्ट पेपर (वाटर मार्क) तथा एच.पी.सी. के 130 (ह्वाईट) आवरण पेपर पर कुल **11,53,518** प्रतियाँ 18 x 24 सेमी साइज में मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। इस क्रम में शैक्षिक सत्र 2010-11 के लिए वर्ग I, III, IV एवं X की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पाठ्य पुस्तकें नए पाठ्यक्रम के अनुरूप लागू की गयीं। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की गणित एवं विज्ञान तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I, III, VI एवं X की सभी अन्य भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की गयीं। इस सिलसिले की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए शैक्षिक सत्र 2011-12 के लिए वर्ग–II, IV एवं VII तथा शैक्षिक सत्र 2012-13 के लिए वर्ग V एवं VIII की नई पाठ्य–पुस्तकें बिहार राज्य के छात्र/छात्राओं के लिए उपलब्ध करायी गयीं। साथ–ही–साथ वर्ग I से VIII तक की पुस्तकों का नया परिमार्जित रूप भी शैक्षिक सत्र 2013-14 के लिए एस०सी०ई०आर०टी०, विहार, पटना के सौजन्य से प्रस्तुत किया जा रहा है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार, शिक्षा मंत्री, श्री पी०के० शाही एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, श्री अमरजीत सिन्हा के मार्ग दर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

जे. के. पी. सिंह, भा.रे.का.से.
प्रबन्ध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य–पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

दिशा -बोध-सह-पाठ्यपुस्तक विकास समन्वय समिति

- **श्री राहुल सिंह**, राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद, पटना।
- **श्री रामशरणागत सिंह**, संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार
  विशेष कार्य पदाधिकारी, वी.एस.टी.वी.सी., पटना
- **श्री अमित कुमार**, सहायक निदेशक, प्राथमिक शिक्षा निदेशालय, बिहार सरकार
- **डॉ. श्वेता सांडिल्य**, शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना।
- **श्री हसन वारिस**, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- **श्री मधुसूदन पासवान**, कार्यक्रम पदाधिकारी बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **डॉ. एस.ए. मुईन**, विभागाध्यक्ष एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- **डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**, प्राचार्य मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

विषय विशेषज्ञ :

- **डॉ० उषा शर्मा**, एसोसिएट प्रोफेसर, एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली
- **डॉ० निरंजन सहाय**, एसोसिएट प्रोफेसर, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ० प्र०)
- **श्री विरेन्द्र सिंह रावत**, शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

लेखक सदस्य :

- **श्री आदित्य नाथ ठाकुर**, सहायक शिक्षक, रा० माउंट एवरेस्ट मध्य विद्यालय कंकड़बाग, पटना
- **श्री उमा शंकर सिंह**, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय मस्तपुरा, बोधगया, गया
- **श्री क्रीत प्रसाद**, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय चंडासी, नूरसराय, नालन्दा
- **श्रीमती कुमारी प्रेमलता**, सहायक शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय करोड़ीचक, फुलवारीशरीफ, पटना
- **श्री मनीष कुमार राय**, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कनवा पाड़ा, कसबा, पूर्णिया
- **श्री मनीष रंजन**, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय मित्तनचक मुसहरी, सम्पतचक, पटना
- **श्रीमती माधुरी लता**, मध्य विद्यालय हथसारगंज, हाजीपुर, वैशाली
- **श्री सुमन कुमार सिंह**, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय कौड़िया वसंती, भगवानपुरहाट, सिवान
- **श्री पुष्पराज**, विद्या भवन, उदयपुर
- **श्री कुमार अनुपम मिश्र**, विद्या भवन, उदयपुर

समन्वयक :

- **डा० अर्चना, व्याख्याता**, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना

समीक्षक :

- **डा० कलानाथ मिश्र**, हिंदी विभाग, ए० एन०, कॉलेज, पटना
- **डा० सच्चिदा कुमार 'प्रेमी'**, प्राचार्य, टिकारी राज इण्टर विद्यालय, टिकारी (गया)

आरेखन एवं चित्रांकन :

- **श्री सदानंद सिंह**, धंधुआ, वैशाली

आभार : यूनिसेफ, बिहार

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और बिहार की पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 के आलोक में निर्मित ''कोंपल, भाग-3'', नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार की गई है। पाठ्यचर्याओं का मानना है कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल के बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए। किताब और किताब से बाहर की दुनिया आपस में गुँथी हुई होनी चाहिए। इस पुस्तक के विकास में इस बात का ध्यान रखा गया है कि 'शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें और साथ ही साथ इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार है।'

भाषा सीखने-सिखाने का मुख्य उद्देश्य है- विभिन्न संदर्भों में भाषा का प्रभावी प्रयोग करना। प्रयोग से उपजी इस भाषायी आदत को सुदृढ़ करने का कार्य करती है - शिक्षाशास्त्रीय पद्धतियाँ और सामग्री। जिनमें से पाठ्य-पुस्तक एक महत्त्वपूर्ण सामग्री मानी जाती है। ''कोंपल, भाग-3'', का समस्त कलेवर इस तरह से रचा बुना गया है जिससे बच्चों को हिंदी भाषा की विभिन्न रंगतों से परिचित होने का अवसर मिल सके और भाषा-प्रयोग का भी। जहाँ तक भाषा प्रयोग का सवाल है, उसके लिए महत्त्वपूर्ण है - परिचित और सार्थक संदर्भ। इस पाठ्य-पुस्तक में बच्चों के परिवेश और अनुभवों को विशिष्ट स्थान दिया गया है। यह कोशिश की गई है कि बच्चों की दुनिया की भाषा और पाठ्य-पुस्तक की भाषा में गहरी खाई न हो। साथ ही बिहार की स्थानीय भाषाओं के साथ अन्य भारतीय भाषाओं की रचनाएँ भी इस पुस्तक में शामिल की गई हैं। अन्य भाषाओं से अनूदित पाठ भारत की सामासिक संस्कृति से परिचित कराते हैं।

बच्चों के जीवन की विभिन्न संवेदनाओं, छवियों, रंगतों से सराबोर इस पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु के रंग भी अनंत है । जहाँ कुछ रचनाएँ बच्चों को अपने परिवेश को समझने, चिंतन करने सोचने-समझने के लिए अवसर देती है। वहीं दूसरी ओर हास्य के पुट वाली रचनाएँ बच्चों को किताब के पन्ने पलटने के लिए प्रेरित करती है । इस पुस्तक के माध्यम से साहित्य की विभिन्न विधाओं-कहानी, कविता, पत्र, नाटक, जीवनी आदि से जुड़ने का अवसर मिलता है। बाल मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए चुनी गई रचनाएँ बच्चों को रोचक लगेंगी ।

इस पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यास यह अवसर प्रदान करते हैं कि बच्चे पाठ के साथ-साथ उससे आगे जाकर भी चिंतन, तर्क, कल्पना, अनुमान आदि क्षमताओं का विकास कर सकें ।

शिक्षकों को यह ध्यान में रखना होगा कि पाठों के अंत में दिए गए अभ्यास भाषा सीखने सीखाने से जुड़े कक्षायी अभ्यासों का हिस्सा बन सकते हैं। इन अभ्यासों को केवल पाठ के अंत में ही स्थान देने की प्रवृत्ति से बचना होगा। बिहार के बहुभाषिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए बच्चों को अलग-अलग भाषायी रंगों की सराहना करने और अपनी भाषा में अभिव्यक्ति करने का अवसर देते हैं । कल्पना, सृजन से जुड़े अभ्यास बच्चों के सौंदर्यबोध और कलात्मकता को विकसित करने में सहायक होंगे ।

भाषायी संदर्भ से उपजा व्याकरण बच्चों को हिन्दी भाषा से जुड़े नियमों का अवलोकन करने, समझने और संदर्भयुक्त प्रयोग करने की कुशलता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही भाषा के आधारभूत कौशलों - सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना-को विकसित करने की भरपूर गुंजाइश इस पुस्तक में है। सवाल करने की संस्कृति को बढ़ावा देते हुए शिक्षक बच्चों को पाठ पर आधारित सवाल बनाने के लिए प्रेरित करें। रोचक गतिविधियाँ बच्चों की उत्सुकता को बढ़ाएँगी और तनावमुक्त रीति से पढ़ते हुए आनन्द लेने का अवसर देंगी। जीवन को बेहतर तरीके से जीने के लिए आवश्यक जीवन-कौशलों जैसे - समस्या -समाधान, निर्णय लेने की क्षमता, तार्किक-चिंतन, सृजनात्मक चिंतन, तदनुभूति आदि के विकास की अपार संभावनाएँ इस पाठ्यपुस्तक में यहाँ-वहाँ फैली हुई हैं। जरूरत है तो इस बात की कि शिक्षक इन संभावनाओं की पहचान करते हुए बच्चों में इनके विकास के लिए प्रयासरत हों।

इस पुस्तक में बच्चों द्वारा सवाल करने और उनका उत्तर ढूँढ़ पाने के मौलिक अधिकार का समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गयी है। साथ ही बच्चों को न सिर्फ पूरा भागीदार माना गया है बल्कि उन्हें भागीदार बनाने के पर्याप्त मौके भी दिए गए हैं।

हिन्दी पाठ्यपुस्तक के विकास हेतु राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना में विभागीय पदाधिकारियों, संकाय सदस्यों, विषय विशेषज्ञों, भाषा कार्यशालाएँ एवं प्रारंभिक शिक्षकों की विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं। इसमें राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, यूनिसेफ, बिहार, विद्या भवन सोसाइटी, उदयपुर (राजस्थान), एकलव्य (भोपाल) एवं अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों से प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययनकर राज्य के प्रारंभिक स्तर के शिक्षक समूह द्वारा पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार की गई। परिषद् इन सबके प्रति आभार प्रकट करती है। विकसित पुस्तक को पाठ्यपुस्तक विकास समिति से जुड़े प्रारंभिक शिक्षकों द्वारा विद्यालयों एवं संकुल स्तरीय शैक्षिक गोष्ठियों में ट्रायल के पश्चात प्राप्त सुझावों में विषय विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों द्वारा समीक्षोपरांत पुस्तक कोंपल भाग-3 परिष्कृत स्वरूप में प्रस्तुत है।

हम पाठ्यपुस्तक के विकास में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सम्बद्ध शिक्षकों, विषय विशेषज्ञों, सुप्रसिद्ध साहित्यकारों, जिनकी रचनाएँ इस पुस्तक में शामिल की गई हैं, उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

माननीय शिक्षकों एवं बुद्धिजीवियों से जो महत्त्वपूर्ण सुझाव हमें प्राप्त हुए उन्हें इस पुस्तक में यथास्थान संशोधित कर दिया गया है। पुनश्च, उत्तरोत्तर बेहतरी हेतु आपके सुझावों की प्रतीक्षा में।

हसन वारिस

निदेशक,

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् पटना

पाठ-सूची

क्र॰सं॰	पाठ का नाम	विधा	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.★	हिंद देश के निवासी	(कविता)		1
2.	टिपटिपवा	(लोक कथा)	सं॰ मृदुला सिन्हा	5
3.	हुआ यूँ कि.........	(संस्मरण)	भीष्म साहनी	14
4.	चाँद का कुर्त्ता	(कविता)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	22
5.★	म्यान का रंग	(कहानी)	सं॰ संदीप गुप्ता	28
6.	उपकार का बदला	(कहानी)	रामदेव झा	32
7.	चतुर चित्रकार	(कविता)	रामनरेश त्रिपाठी	40
8.	ननकू	(कहानी)	मंजू मधुकर	47
9.	ममता की मूर्ति	(जीवनी)	पाठ्यपुस्तक विकास समिति	57
10.★	आया बादल	(कविता)	अखिलेश्वर नाथ त्रिपाठी	63
11.	एक पत्र की आत्मकथा	(ललित निबंध)		67
12.	कविता का कमाल	(कहानी)		74
13.	कदम्ब का पेड़	(कविता)	सुभद्रा कुमारी चौहान	83
14.	दोहे	(कविता)	तुलसी, रहीम, कबीर	90
15	चिट्ठी आई है	(पत्र)	पाठ्यपुस्तक विकास समिति	94
16.	मरता क्या न करता	(कहानी)	के॰ शिव कुमार	101
17.★	बिना जड़ का पेड़	(कहानी)	वीरेन्द्र झा	111
18.	आजादी में जीवन	(कविता)	भगवती प्रसाद द्विवेदी	117
19.	अँधेर नगरी	(एकांकी)	भारतेंदु हरिश्चंद्र	124
20.★	क्यों	(कविता)	श्रीनाथ सिंह	137
21.	ईद	(कहानी)	श्री मुरलीधर	139
22.	परीक्षा	(कहानी)	जातक कथा	148
23.★	मिथिला-चित्रकला	(निबंध)	पाठ्यपुस्तक विकास समिति	156

तारांकित रचनाएँ केवल पढ़ने के लिए दी गई है।